



Avinav Choudhary

04 Sep 2010

09:48 AM

Patan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121216301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 04/09/2010
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 09:48:00 घंटे
इष्ट _____: 10:31:02 घटी
स्थान _____: Patan
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:14:00 उत्तर
रेखांश _____: 84:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:06:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:54:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:00:51 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:47:32 घंटे
सूर्योदय _____: 05:35:35 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:08:34 घंटे
दिनमान _____: 12:32:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 17:32:07 सिंह
लग्न के अंश _____: 13:44:49 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: आर्द्रा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: व्यतिपात
करण _____: बव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: छ-छत्रपति
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	भाद्रपद	13
पंजाबी	संवत : 2067	भाद्रपद	20
बंगाली	सन् : 1417	भाद्रपद	18
तमिल	संवत : 2067	आवनी	19
केरल	कोल्लम : 1186	चिंगम	19
नेपाली	संवत : 2067	भाद्रपद	19
चैत्रादि	संवत : 2067	भाद्रपद	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2067	श्रावण	कृष्ण 10

पंचांग

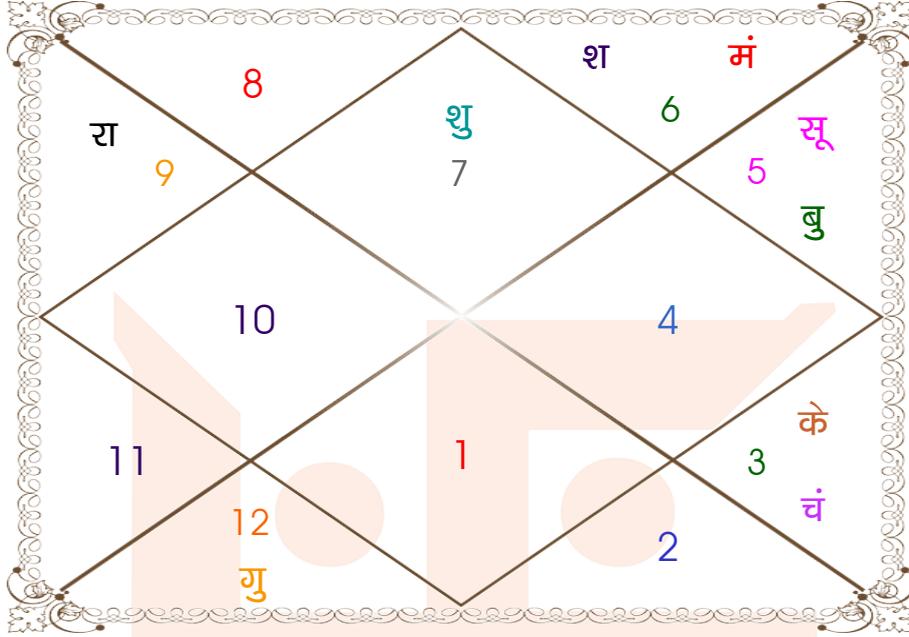
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:14:12
जन्म तिथि _____ : 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आर्द्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:32:44 घंटे
जन्म योग _____ : आर्द्रा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्धि
योग समाप्ति काल _____ : 05:39:23 घंटे
जन्म योग _____ : व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 08:14:12 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 50:40:32
भभोग _____ : 57:32:24
भोग्य दशा काल _____ : राहु 2 वर्ष 2 मा 3 दि

घात चक्र

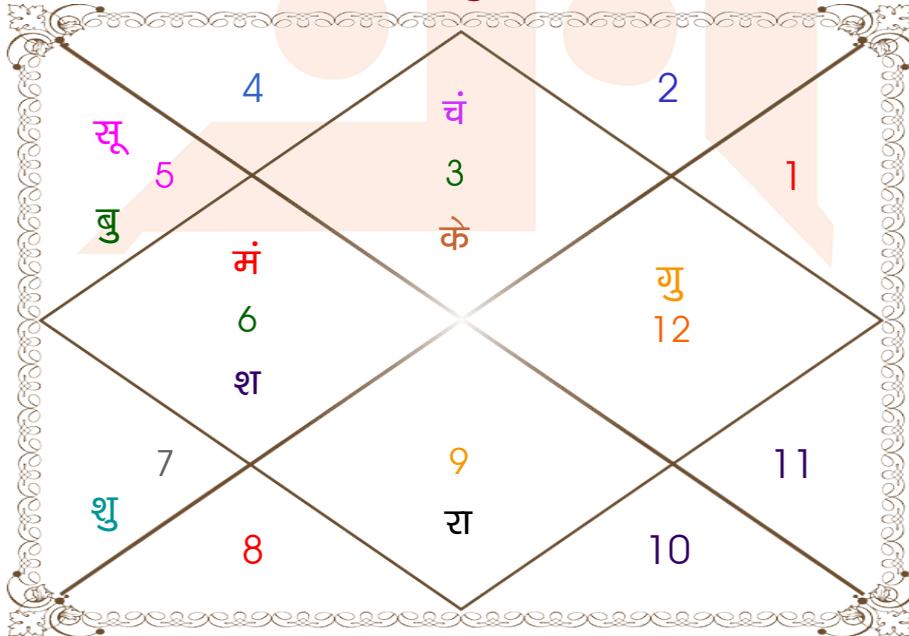
मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मृग
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

गु			चं के
			बु सू
रा	शु ल	श मं	

लग्न कुण्डली

के चं		गु
सू बु	मं श	ल शु
		रा

विंशोत्तरी
राहु 2वर्ष 2मा 3दि
राहु

04/09/2010

09/11/2114

राहु	07/11/2012
गुरु	07/11/2028
शनि	08/11/2047
बुध	07/11/2064
केतु	08/11/2071
शुक्र	08/11/2091
सूर्य	07/11/2097
चन्द्र	09/11/2107
मंगल	09/11/2114

योगिनी

मंगला 0वर्ष 1मा 13दि
उल्का

18/10/2024

18/10/2030

उल्का	18/10/2025
सिद्धा	18/12/2026
संकटा	18/04/2028
मंगला	18/06/2028
पिंगला	18/10/2028
धान्या	18/04/2029
भ्रामरी	18/12/2029
भद्रिका	18/10/2030

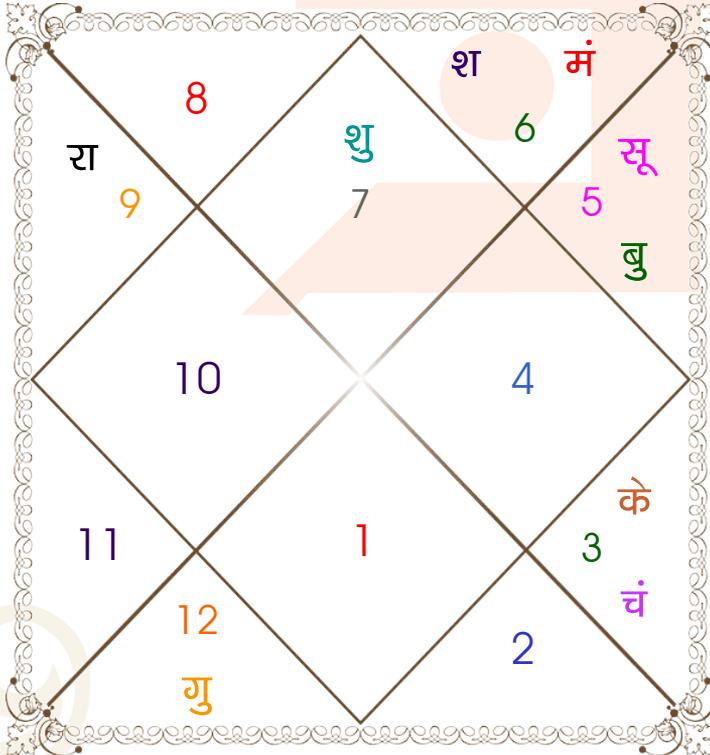
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	13:44:49	318:58:19	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
सूर्य			सिंह	17:32:07	00:58:09	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	मूलत्रिकोण
चंद्र			मिथु	18:23:15	14:04:07	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			कन्या	28:52:20	00:39:17	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
बुध	व	अ	सिंह	16:16:56	00:56:08	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
गुरु	व		मीन	06:36:22	00:07:09	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			तुला	02:26:10	00:49:17	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	केतु	मूलत्रिकोण
शनि			कन्या	10:28:38	00:07:01	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	मित्र राशि
राहु	व		धनु	16:00:51	00:00:12	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	नीच राशि
केतु	व		मिथु	16:00:51	00:00:12	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	नीच राशि
हर्ष	व		मीन	05:17:05	00:02:15	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
नेप	व		कुंभ	02:53:22	00:01:34	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
प्लूटो	व		धनु	08:48:17	00:00:19	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
दशम भाव			कर्क	15:26:19	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	गुरु	--

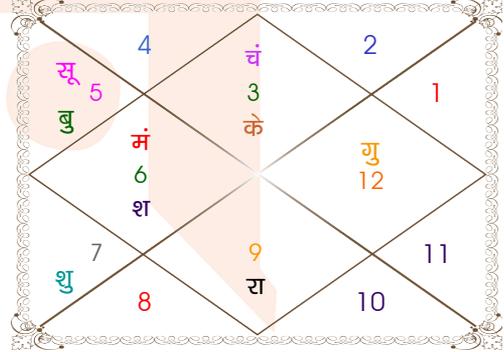
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:40

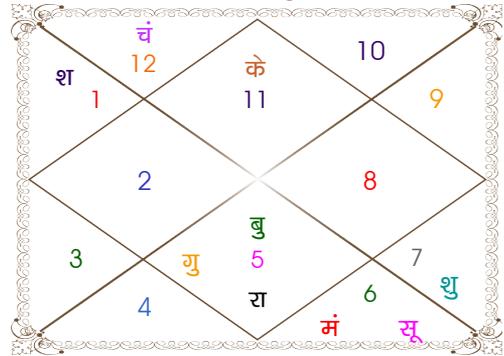
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 29:01:44	तुला 13:44:49
2	तुला 29:01:44	वृश्चिक 14:18:39
3	वृश्चिक 29:35:34	धनु 14:52:29
4	मकर 00:09:24	मकर 15:26:19
5	कुम्भ 00:09:24	कुम्भ 14:52:29
6	कुम्भ 29:35:34	मीन 14:18:39
7	मीन 29:01:44	मेष 13:44:49
8	मेष 29:01:44	वृष 14:18:39
9	वृष 29:35:34	मिथुन 14:52:29
10	कर्क 00:09:24	कर्क 15:26:19
11	सिंह 00:09:24	सिंह 14:52:29
12	सिंह 29:35:34	कन्या 14:18:39

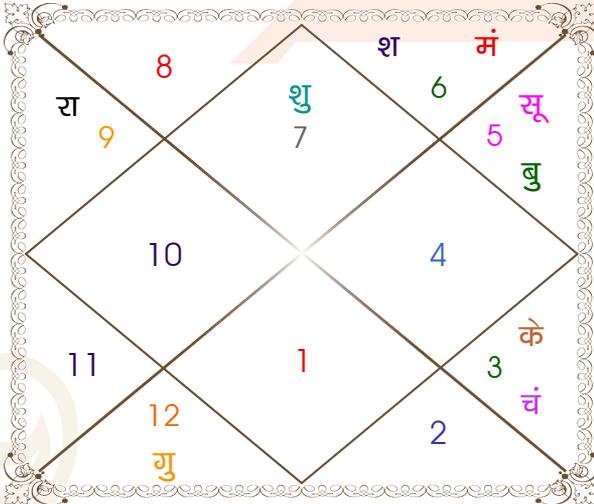
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	13:44:49
2	वृश्चिक	12:54:45
3	धनु	13:29:52
4	मकर	15:26:19
5	कुम्भ	17:32:15
6	मीन	17:26:16
7	मेष	13:44:49
8	वृष	12:54:45
9	मिथुन	13:29:52
10	कर्क	15:26:19
11	सिंह	17:32:15
12	कन्या	17:26:16

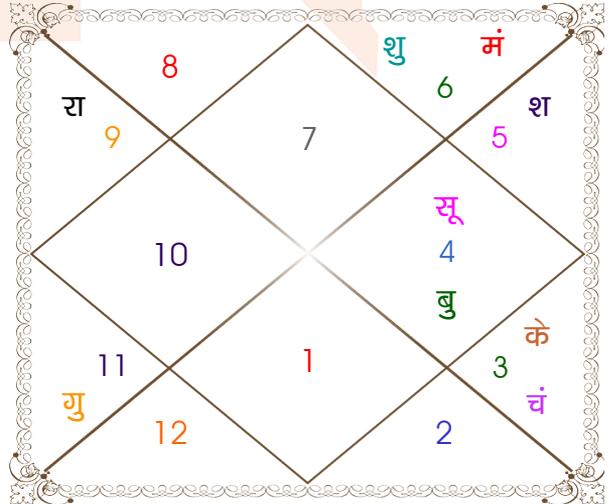
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 2 वर्ष 2 मास 3 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
04/09/2010	07/11/2012	07/11/2028	08/11/2047	07/11/2064
07/11/2012	07/11/2028	08/11/2047	07/11/2064	08/11/2071
00/00/0000	गुरु 26/12/2014	शनि 11/11/2031	बुध 05/04/2050	केतु 05/04/2065
00/00/0000	शनि 09/07/2017	बुध 21/07/2034	केतु 03/04/2051	शुक्र 05/06/2066
00/00/0000	बुध 14/10/2019	केतु 30/08/2035	शुक्र 31/01/2054	सूर्य 11/10/2066
00/00/0000	केतु 19/09/2020	शुक्र 29/10/2038	सूर्य 08/12/2054	चंद्र 12/05/2067
00/00/0000	शुक्र 21/05/2023	सूर्य 11/10/2039	चंद्र 08/05/2056	मंगल 08/10/2067
00/00/0000	सूर्य 09/03/2024	चंद्र 12/05/2041	मंगल 06/05/2057	राहु 26/10/2068
04/09/2010	चंद्र 09/07/2025	मंगल 20/06/2042	राहु 23/11/2059	गुरु 02/10/2069
चंद्र 20/10/2011	मंगल 14/06/2026	राहु 26/04/2045	गुरु 28/02/2062	शनि 11/11/2070
मंगल 07/11/2012	राहु 07/11/2028	गुरु 08/11/2047	शनि 07/11/2064	बुध 08/11/2071

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
08/11/2071	08/11/2091	07/11/2097	09/11/2107	09/11/2114
08/11/2091	07/11/2097	09/11/2107	09/11/2114	00/00/0000
शुक्र 09/03/2075	सूर्य 25/02/2092	चंद्र 08/09/2098	मंगल 06/04/2108	राहु 22/07/2117
सूर्य 09/03/2076	चंद्र 26/08/2092	मंगल 09/04/2099	राहु 24/04/2109	गुरु 15/12/2119
चंद्र 07/11/2077	मंगल 01/01/2093	राहु 09/10/2100	गुरु 31/03/2110	शनि 21/10/2122
मंगल 07/01/2079	राहु 26/11/2093	गुरु 08/02/2102	शनि 10/05/2111	बुध 10/05/2125
राहु 07/01/2082	गुरु 14/09/2094	शनि 09/09/2103	बुध 06/05/2112	केतु 28/05/2126
गुरु 07/09/2084	शनि 27/08/2095	बुध 07/02/2105	केतु 02/10/2112	शुक्र 28/05/2129
शनि 08/11/2087	बुध 02/07/2096	केतु 08/09/2105	शुक्र 03/12/2113	सूर्य 22/04/2130
बुध 08/09/2090	केतु 07/11/2096	शुक्र 10/05/2107	सूर्य 09/04/2114	चंद्र 05/09/2130
केतु 08/11/2091	शुक्र 07/11/2097	सूर्य 09/11/2107	चंद्र 09/11/2114	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 2 वर्ष 1 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल 09/07/2025 14/06/2026	गुरु - राहु 14/06/2026 07/11/2028	शनि - शनि 07/11/2028 11/11/2031	शनि - बुध 11/11/2031 21/07/2034	शनि - केतु 21/07/2034 30/08/2035
मंगल 28/07/2025 राहु 18/09/2025 गुरु 02/11/2025 शनि 26/12/2025 बुध 12/02/2026 केतु 04/03/2026 शुक्र 30/04/2026 सूर्य 17/05/2026 चंद्र 14/06/2026	राहु 24/10/2026 गुरु 18/02/2027 शनि 07/07/2027 बुध 08/11/2027 केतु 29/12/2027 शुक्र 23/05/2028 सूर्य 06/07/2028 चंद्र 17/09/2028 मंगल 07/11/2028	शनि 30/04/2029 बुध 03/10/2029 केतु 06/12/2029 शुक्र 07/06/2030 सूर्य 01/08/2030 चंद्र 31/10/2030 मंगल 03/01/2031 राहु 17/06/2031 गुरु 11/11/2031	बुध 29/03/2032 केतु 25/05/2032 शुक्र 05/11/2032 सूर्य 24/12/2032 चंद्र 16/03/2033 मंगल 13/05/2033 राहु 07/10/2033 गुरु 15/02/2034 शनि 21/07/2034	केतु 14/08/2034 शुक्र 20/10/2034 सूर्य 09/11/2034 चंद्र 13/12/2034 मंगल 06/01/2035 राहु 07/03/2035 गुरु 30/04/2035 शनि 03/07/2035 बुध 30/08/2035
शनि - शुक्र 30/08/2035 29/10/2038	शनि - सूर्य 29/10/2038 11/10/2039	शनि - चंद्र 11/10/2039 12/05/2041	शनि - मंगल 12/05/2041 20/06/2042	शनि - राहु 20/06/2042 26/04/2045
शुक्र 10/03/2036 सूर्य 06/05/2036 चंद्र 11/08/2036 मंगल 17/10/2036 राहु 09/04/2037 गुरु 10/09/2037 शनि 12/03/2038 बुध 23/08/2038 केतु 29/10/2038	सूर्य 16/11/2038 चंद्र 15/12/2038 मंगल 04/01/2039 राहु 25/02/2039 गुरु 12/04/2039 शनि 06/06/2039 बुध 25/07/2039 केतु 15/08/2039 शुक्र 11/10/2039	चंद्र 29/11/2039 मंगल 01/01/2040 राहु 28/03/2040 गुरु 13/06/2040 शनि 13/09/2040 बुध 04/12/2040 केतु 06/01/2041 शुक्र 13/04/2041 सूर्य 12/05/2041	मंगल 04/06/2041 राहु 04/08/2041 गुरु 27/09/2041 शनि 30/11/2041 बुध 26/01/2042 केतु 19/02/2042 शुक्र 28/04/2042 सूर्य 18/05/2042 चंद्र 20/06/2042	राहु 24/11/2042 गुरु 11/04/2043 शनि 23/09/2043 बुध 18/02/2044 केतु 18/04/2044 शुक्र 09/10/2044 सूर्य 30/11/2044 चंद्र 25/02/2045 मंगल 26/04/2045
शनि - गुरु 26/04/2045 08/11/2047	बुध - बुध 08/11/2047 05/04/2050	बुध - केतु 05/04/2050 03/04/2051	बुध - शुक्र 03/04/2051 31/01/2054	बुध - सूर्य 31/01/2054 08/12/2054
गुरु 28/08/2045 शनि 21/01/2046 बुध 01/06/2046 केतु 25/07/2046 शुक्र 27/12/2046 सूर्य 11/02/2047 चंद्र 29/04/2047 मंगल 22/06/2047 राहु 08/11/2047	बुध 11/03/2048 केतु 02/05/2048 शुक्र 25/09/2048 सूर्य 08/11/2048 चंद्र 21/01/2049 मंगल 13/03/2049 राहु 23/07/2049 गुरु 17/11/2049 शनि 05/04/2050	केतु 27/04/2050 शुक्र 26/06/2050 सूर्य 14/07/2050 चंद्र 13/08/2050 मंगल 03/09/2050 राहु 28/10/2050 गुरु 15/12/2050 शनि 10/02/2051 बुध 03/04/2051	शुक्र 22/09/2051 सूर्य 13/11/2051 चंद्र 07/02/2052 मंगल 07/04/2052 राहु 10/09/2052 गुरु 26/01/2053 शनि 09/07/2053 बुध 02/12/2053 केतु 31/01/2054	सूर्य 16/02/2054 चंद्र 14/03/2054 मंगल 01/04/2054 राहु 18/05/2054 गुरु 28/06/2054 शनि 16/08/2054 बुध 29/09/2054 केतु 17/10/2054 शुक्र 08/12/2054

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

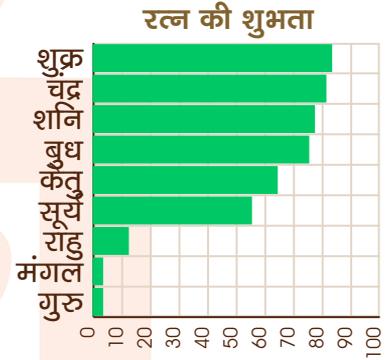
मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	83%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	81%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	77%	कम खर्च, सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	64%	भाग्योदय, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	55%	धनार्जन
गोमेद	राहु	12%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	3%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	3%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	07/11/2012	35%	69%	0%	75%	3%	89%	83%	38%	52%
गुरु	07/11/2028	61%	88%	16%	62%	28%	71%	77%	12%	64%
शनि	08/11/2047	35%	69%	0%	81%	3%	89%	89%	25%	52%
बुध	07/11/2064	61%	69%	3%	88%	3%	89%	77%	12%	64%
केतु	08/11/2071	35%	69%	16%	75%	3%	89%	64%	0%	77%
शुक्र	08/11/2091	35%	69%	3%	81%	3%	96%	83%	25%	70%
सूर्य	07/11/2097	67%	88%	16%	75%	15%	71%	64%	0%	52%
चंद्र	09/11/2107	61%	94%	3%	81%	3%	83%	77%	0%	52%
मंगल	09/11/2114	61%	88%	28%	62%	15%	83%	77%	0%	70%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/09/2010-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

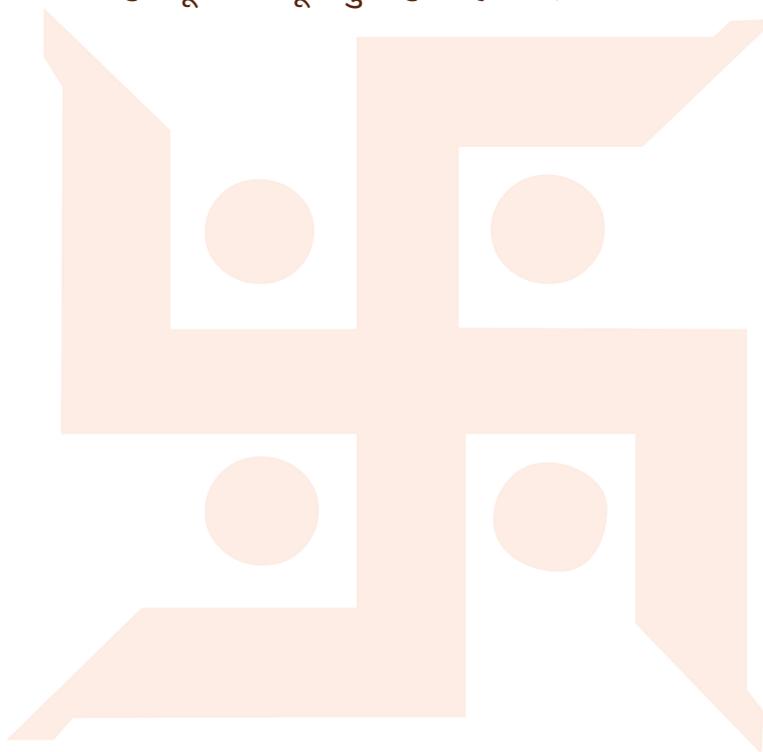
आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, बुध और केतु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर

पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभातृवान् होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग कराएंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध

सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(07/11/2012 - 07/11/2028)

आपकी कुंडली में गुरु की महादशा 07/11/2012 को आरम्भ तथा 07/11/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्मकुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। षष्ठ भाव बीमारी, रोग, कर्मचारी, नौकर, ऋण, शत्रु, मामा, तथा क्रोध का भाव है। गुरु स्वभावतः शुभ ग्रह है जिसकी षष्ठ भाव में स्थिति तथा दशम, द्वादश तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको कभी-कभी छोटी समस्या हो सकती है परन्तु कुल मिलाकर आपके लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य :

गुरु के रोग, शत्रु तथा ऋण के द्योतक षष्ठ भाव में स्थित होने के फलस्वरूप आपको रोग से मुक्ति मिलेगी। पैर तथा यकृत जनित रोग के प्रति सतर्कता बरतें।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की षष्ठ भाव में स्थिति तथा जीविका, खर्च और धन से संबंधित द्वादश, दशम एवं द्वितीय भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको इस दशा-काल में अपने धन की वृद्धि करने का पर्याप्त सुअवसर मिलेगा। आप अपने स्रोतों में वृद्धि करेंगे तथा विलासिता की चीजों पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की दृष्टि दशम भाव (केंद्र तथा कर्म भाव), द्वादश अर्थात् व्यय भाव तथा द्वितीय यानी धन भाव पर होने के कारण आपको अपने कर्म क्षेत्र में ऊपर उठने तथा धन कमाने का सुअवसर प्राप्त होगा। कभी कभार घाटे से बचने के लिए कुछ सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवनसाथी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे तथा आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(09/07/2025 - 14/06/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 07/11/2012 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/07/2025 को प्रारंभ होकर वद 14/06/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। आर्थिक समस्याएं आ सकती हैं, कर्ज बढ़ सकता है। अध्यात्म और धर्म में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। निवेश और साझेदारी से लाभ हो सकता है। विरोधियों पर विजय होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; स्पर्धियों पर विजयी होंगे। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; वाहन सुख रहेगा। माता की दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, स्पर्धियों पर विजय, धन के लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकारिता से लाभ होगा; आय अच्छी होगी। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(14/06/2026 - 07/11/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 07/11/2012 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 14/06/2026 को प्रारंभ होकर 07/11/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आप सब कार्यों में साहस का परिचय देंगे। मुख्य इच्छाएं पूर्ण होंगी। किस्मत चमकेगी। धनागम होगा। बाधाओं के बावजूद वांछित कार्य बन जाएंगे। लघु यात्राओं, छोटे भाई-बहन, लेखन और प्रकाशन से धनार्जन हो सकता है। पिता से संबंध मधुर रहेंगे। सांसारिक सुखों में वृद्धि होगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है; सांसारिक सुखों में वृद्धि होगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ हो सकता है। माता के खर्चे बढ़ेंगे, यात्रा हो सकती है, सफलता में बाधा आ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, निवेश से लाभ,

महादशा :- शनि
(07/11/2028 - 08/11/2047)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 07/11/2028 को आरम्भ और 08/11/2047 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बारीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

धन-सम्पत्ति :

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

व्यवसाय :

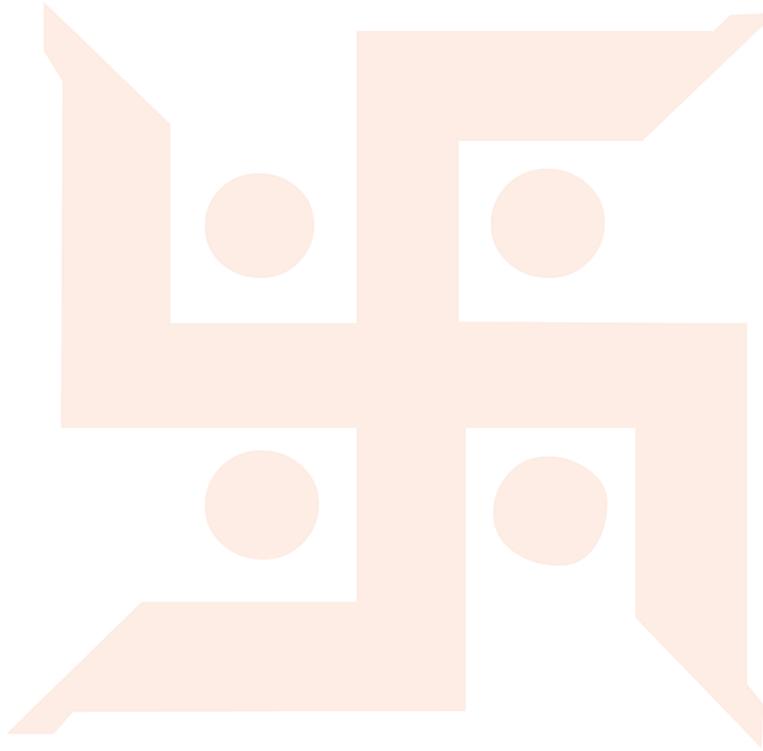
आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

पारिवारिक कार्य :

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।



**अंतर्दशा :- शनि - शनि
(07/11/2028 - 11/11/2031)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/11/2028 को प्रारंभ होकर 08/11/2047 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 07/11/2028 को प्रारंभ होकर 11/11/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको संयम और धैर्य से काम करना होगा क्योंकि शनि आपकी परीक्षा ले सकता है। व्यापार में धनहानि संभव है। आलस्य की भावना रह सकती है; शत्रु बढ़ सकते हैं। गुपचुप पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में, सोने की अंगूठी में नीलम, शनिवार के दिन, रात्रिशयन से पूर्व, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर, प्रार्थना के उपरांत धारण करें।